ओ३म्

देहरादून। दिनांकः 9 अक्तूबर, 2014

प्रैस समाचार / विज्ञप्ति

–वैदिक साधन आश्रम, तपोवन के शरदुत्सव के दूसरे दिन महिला सम्मेलन का आयोजन–

'नारी नरक का नहीं अपितु स्वर्ग और मोक्ष का द्वार है'

देहरादून 9 अक्तूबर। वैदिक साधन आश्रम, तपोवन, देहरादून के वार्षिकोत्सव के दूसरे दिन आज पाणिनी कन्या महाविद्यालय, वाराणसी की विदुषी आचार्या प्रियंका शास्त्री की अक्ष्यक्षता में महिला सम्मेलन का आयोजन सम्पन्न हुआ जिसका विषय था कि **''नारी नरक का द्वार है या स्वर्ग का?''** आयोजन का आरम्भ वाराणसी गुरूकुल की 5 ब्रह्मचारिणियों के वेदों के सस्वर पाठ से आरम्भ हुआ जिसके बाद **''ओ३म् संकीर्तन''** गाकर प्रस्तुत किया गया। गुरूकुल की ब्रह्चारिणियों ने एक मनोरम भजन भी प्रस्तुत किया जिसके बोल थे – **''डूब गया संस्कृति का बेड़ा तो फिर भारत क्या होगा। लुट गई पूंजी परम्परा की तो फिर भारत क्या होगा?''** इस भजन के पश्चात वातावरण को धर्म व श्रद्धामय बनाने के लिए प्रसिद्धि गायिका श्रीमति मीनाक्षी देवी ने एक अत्यन्त मधुर व हृदय को छू लेने वाला भजन प्रस्तुत किया जिसके बोल थे – **''प्रभु के सिवा तो कोई, साथी नहीं किसी का। दिल में गुरूर क्यों फिर, इन्सां और सरजमीं का।।''** श्रोंताओं और संचालिका श्रीमति सुरेन्द्र अरोड़ा ने भजन की प्रंशसा की। श्रीमति मीनाक्षी के बाद श्रीमति मंजू नारंग ने अपने सम्बोधन में स्वर्ग और नरक की चर्चा करते हुए कहा कि यजुर्वेद के अनुसार जो व्यक्ति आत्म हनन करता है, वह असुर कहलाता है। यह असुर लोग ऐसे लोक में रहते हैं जहां घोर अन्धकार और दुःख भरा हुआ है। उन्होंने कहा कि जहां सुख होता है उसे स्वर्ग और जहां दुःख होता है वह स्थान नरक कहलाता है। उन्होंने आगे कहा कि नारी का पहला रूप कन्या का होता है। पुत्री के रूप में जन्म लेने से इसे कन्या इस कारण कहते हैं कि यह माता–पिता और परिवार के लोगों की कामना के योग्य होती है। **भ्रूण हत्या की चर्चा कर उन्होंने दुःख व्यक्त किया और कहा कि वर्तमान में कन्या का जन्म कमनीय नहीं रहा।** वैदिक काल में कन्यायें पिता के घर में सुख पूर्वक रहा करती थी। कन्या का जन्म होने से माता पिता के सुख की सीमा नहीं रहती। दुःख केवल इस बात का होता है कि विवाह के बाद यह उन्हें छोड़ कर चली जायेगी।

विदुषी श्रीमति मंजू नारंग ने कहा कि जहां कन्या कमनीय होती है वहां उसकी पूजा की जाती है। विदुषी वक्ता ने पार्वती के तप की चर्चा कर उस पर प्रकाश डाला और कहा कि कन्या का दूसरा रूप पत्नी का होता है जिसे भार्या और अर्धांग्नि भी कहते हैं। विवाह संस्कार का उदाहरण देकर उन्होंने कहा कि विवाह संस्कार में कन्या और वर सात कदम साथ–साथ चल कर सखा एवं पति–पत्नी बनते हैं। यह पति व पत्नी का सम्बन्ध दो मित्रों के सम्बन्ध जैसे होता है। उन्होंने कहा कि नारी नरक का द्वार नहीं है। नारी तो वह है जो पुरूष को उच्च स्थान पर पहुंचाती है। महाकवि तुलसीदास का उदाहरण देकर उन्होंने कहा कि पत्नी के चार शब्द उनके भावी जीवन की श्रेष्ठता के प्रेरणा स्रोत बन गये। श्रीमति मंजू नारंग ने स्वामी श्रद्धानन्द और उनके मदिरापान आदि दुर्गुणों की चर्चा कर कहा कि उनकी पत्नी के सदव्यवहार ने उनका जीवन बदल दिया और वह पहले महात्मा और बाद में स्वामी श्रद्धानन्द बने और देश व विदेश में विख्यात हुए। उन्होंने कहा कि स्त्री प्रेरणा देने वाली होती है, वह कभी नरक का द्वार नहीं हो सकती। **विदुषी वक्ता ने कहा कि पत्नी के बाद नारी का रूप माता का रूप होता है।** उन्होंने कहा कि उन्होंने विस्तृत संस्कृत और वैदिक साहित्य पढ़ा है। उसमें पिता के लिए, पुत्र के लिए, पुत्री के लिए, आचार्य के लिए, राजा के लिए तो शिक्षाओं और कर्तव्यों की शिक्षा है परन्तु माता के लिए कोई शिक्षा व कर्तव्य का निर्देश नहीं है। इसका कारण उन्होंने बताया कि माता तो स्वभावतः ही सन्तानों का हमेशा हित करती है। कोई माता अपनी सन्तानों का कभी कुछ बुरा नहीं करती, यही कारण है कि माता के कर्तव्यों का निर्देश नहीं किया गया। **उन्होंनें जब यह कहा कि माता तो सन्तानों के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर देती है तो श्रोताओं की आंखे गीली हो गईं।** उन्होंने आगे कहा कि कन्या माता व पिता का जैसा सत्कार करती है वैसा पुत्र नहीं किया करते। **उन्होंने पुत्रियों को स्वर्ग का द्वार बताया।** ओजस्वी वक्ता ने एक बहिन की घटना सुनाई जिसका एकलौता भाई एक

दुर्घटना में मर गया। उस भाई का अन्त्येष्टि संस्कार बहिन ने उसे मुखाग्नि देकर किया। उन्होंने कहा कि आज समाज बदल रहा है और नारी भी आज अपनी नई भूमिका में अपने कर्तव्यों का निर्वाह कर रही है। रानी लक्ष्मीबाई की वीरता और खेलों में भारत को स्वर्ण पदक दिलाने वाली महिलाओं का स्मरण कर उन्होंने नारी जीवन के प्रकाशमान पक्ष पर कवित्री सुभद्रा कुमारी चौहान की एक भाव विभोर करने वाली कविता प्रस्तुत की जिसमें कन्या को माता की गोदी की शोभा कहा गया है।

द्रोणस्थली कन्या गुरूकुल, देहरादून की 5 कन्याओं ने वेद मन्त्र का पाठ सुनाया और एक मधुर एवं प्रेरणादायक भजन प्रस्तुत किया जिसके बोल थे – **"मेरी देश की बहनों तुमको देख रही दुनिया सारी, तुम पे बड़ी है जिम्मेदारी। घर घर को तुम स्वर्ग बना दो, घर आंगन को फुलवारी।।"** इसके पश्चात डा. विनोद कुमार का एक ओजस्वी व्याख्यान हुआ जिसमें उन्होंने देश में नारियों के उत्पीड़न और बलात्कार जैसी घटनाओं का उल्लेख कर उस पर अपनी हार्दिक पीड़ा प्रकट की। आपने समाज में दिनों दिन बढ़ रही अश्लीलता का भी दुःख भरे शब्दों में उल्लेख किया। **उन्होंने कहा कि आज हमारी सन्तानें हमारे विचारों की नहीं हैं।** अपने बच्चों को हम नियंत्रित नहीं कर पा रहे हैं। बड़ी आयु की माताओं व बहनों की वेश भूषा, आचार–विचार व जीवन शैली हमारे विचारों के अनुरूप नहीं है। यह सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक पतन की स्थिति है। उन्होंने कहा कि अश्लीलता में वृद्धि का एक कारण फैशन है। उन्होंने कहा कि बलात्कारों की जड़ में भी अश्लीलता मुख्य कारण है। आगे उन्होंने बताया कि युवक व युवतियों की रक्षा के लिए उन्होंने युवक–युवती रक्षा आन्दोलन आरम्भ किया है। कम्प्यूटर पर उपलब्ध अश्लील वेबसाइटो की चर्चा कर उन्होंने कहा कि इससे बच्चों पर दुष्प्रभाव हो रहा है। चीन व कुछ अन्य देशों की तरह इन अश्लील वेबसाइटों पर उन्होंने प्रतिबन्ध लगाने की मांग की। यदि हम इन मुद्दो पर ध्यान नहीं देगें तो हम अपनी वर्तमान और भावी सन्ततियों की रक्षा नहीं कर पायेगें। डा. विनोद कुमार ने कहा कि आज भाषणों की आवश्यकता नहीं अपितु ठोस कार्य करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि बच्चों को योग्य बनाने के लिए हमें सभी बातों पर ध्यान देना होगा। उन्होंने कहा कि हनी सिंह ने हमारी युवा पीढ़ी का चरित्र व जीवन बिगाड़ कर बेड़ा गर्क कर दिया है। संचालिका महोदया ने डा. विनोद के विचारों को प्रेरणादायक बताया और कहा कि बलात्कार की घटनाओं में स्त्री वर्ग की फैशनपरस्ती भी एक कारण है।

द्रोणस्थली कन्या गुरूकुल, देहरादून की आचार्या डा. अन्नपूर्णा ने कहा कि सबके पूजा के योग्य होने के कारण स्त्री को महिला कहा जाता है। उन्होंने इस बात पर आश्चर्य व्यक्त किया कि महिला सम्मेलन तो समाज में होते हैं परन्तु पुरूष सम्मेलन कहीं नहीं किया जाता। उन्होंने कहा कि महिलाओं के सामने कुछ समस्यायें है, उन्हें दूर करने के लिए महिला सम्मेलन किए जाते हैं। विदुषी आचार्या ने कहा कि नरक का अर्थ है कि व्यक्ति का नीचे गिरना, पाप करना और दुःख उठाना। मनुष्य पुण्य कर्मों को करके ऊपर उठता है। नारी को नरक का द्वार बताने को उन्होंने गलत बताया और कहा कि यदि किसी देश की उन्नति देखनी हो तो वहां की नारियों का जीवन, उनकी शिक्षा व आचरण को देखना चाहिये, उत्तर मिल जायेगा। विदुषी आचार्या ने गीता में श्री कृष्ण द्वारा बताये गये नरक के 3 द्वारो काम, क्रोध और लोभ की चर्चा की और कहा कि नरक के यह तीन ही द्वार हैं, चौथा कोई नहीं है, अतः नारी को नरक का द्वार कहना अनुचति है। उन्होंने कहा कि राम, कृष्ण, दयानन्द, शंकर, राम प्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह, सुभाष आदि को नारी ने ही जन्म दिया था। डा. अन्नपूर्णा ने कहा कि वह सन्तान सौभाग्यशाली है जिसके माता, पिता और आचार्य धार्मिक हों। उन्होंने आगे कहा कि नारी को नरक का द्वार बताने वाले स्वयं नरक में हैं। वेद विदुषी डा. अन्नपूर्णा ने कहा कि जिस घर में माता व पिता हों और सन्तान उनकी सेवा करते हों, वह घर स्वर्ग है। आचार्या अन्नपूर्णा ने आगे कहा कि चाणक्य के अनुसार जिस परिवार में पुत्र व पुत्रियां माता व पिता की आज्ञाकारी हों, सेवा करें, उन पर श्रद्धा रखें, पत्नी वेद के अनुसार यज्ञ करने वाली हो, गायत्री व ओउम् का जप करने वाली हो, पत्नी अपने पति की मेहनत की कमाई से सन्तुष्ट रहने वाली हो, ऐसी पत्नी जहां हो वहीं स्वर्ग है। उन्होंने कहा कि सुख का मूल धर्म है। पत्नी धर्म की रक्षा करने वाली होने से धर्मपत्नी कहलाती है। आज कन्याओं को संस्कार देने की आवश्यकता है। उनके अनुसार मनुष्य अपने जीवन को नरक स्वयं ही बनाते हैं। नारी नरक नहीं है अपितु नारी तो घर को व देश को स्वर्ग बनाने वाली है। विदुषी वक्ता ने कहा कि नारी अबला या दुर्बला नहीं अपितु सबला है। उन्होंने वेद मन्त्र की एक प्रार्थना प्रस्तुत की जिसका भाव है कि मेरे पुत्र शत्रु विनाशक हों और पुत्रियां तेजस्विनी हों। उन्होंने माता पिताओं का आह्वान कर कहा कि वह अपने पुत्र व पुत्रियों को अच्छे

संस्कार दें। डा. अन्नपूर्णा ने युवक युवतियों के जीवन के निर्माण की आवश्यकता बताई। उन्होंने आगे कहा कि नारी तो केवल श्रद्धा की पात्र है, वह नरक नहीं है। संचालिका श्रीमति सुरेन्द्र अरोड़ा ने अपनी टिप्पणी में कहा कि विदुषी आचार्या द्वारा जो ओजस्वी विचार व्यक्त किए गए हैं उन्हें सबको जीवन में उतारना चाहिये। इसके बाद माता सन्तोष वधवा ने एक प्रेरणादायक भजन सुनाया जिसके बोल थे – **"ऐ वेदों के राही दयानन्द स्वामी, तेरा जग में आना गजब हो गया। वो शिवरात्रि ही तो थी जब सभी सो रहे थे, तेरा जाग जाना गजब हो गया।"**

महिला सम्मेलन की एक प्रभावशाली वक्ता बहिन सरोज जी ने कहा कि स्वर्ग मुख्यतः सुख की और नरक दुःख की स्थिति है। नारी मां, बहिन, पत्नी, बेटी के रूप में होती है तो त्याग करती है। उन्होंने कहा कि वेद का पढ़ना–पढ़ाना परम धर्म है, अतः वेद पढ़ने वाली नारी को नरक का द्वार नहीं कह सकते। वेद से दूर जाने पर वह नरक का द्वार बनती है। नारी सुव्रता और सत्य बोलने वाली होती है। वेदों ने नारी को स्योना नाम दिया है जिसका अर्थ है सुख देने वाली। वेद कहते हैं कि नारी दृष्टि को नीचे रखे। उन्होंने दुःख भरे शब्दों में कहा कि आज नारी से दुपट्टा दूर वा समाप्त हो गया है। नारी की वर्तमान वेशभूषा में आई गिरावट का उन्होंने दुःख भरे शब्दों में उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि हम वेद की शरण लें, वेद का स्वाध्याय करें और वेद के अनुसार ईश्वर का ध्यान करें। श्रीमति सरोज जी ने कहा कि जिस घर में पंच महायज्ञ होगें वह घर स्वर्ग होगा। इनके प्रवचन की समाप्ति के पश्चात सुप्रसिद्ध गायिक श्रीमति मीनाक्षी जी ने **"ऋषि के ऋणों को उतारा नहीं जा सकता। ऋषि के उपकारों को भुलाया नहीं जा सकता।। किया है दयानन्द ने प्रचार वेदों का, सत्यार्थ प्रकाश में है सार वेदों का।।"** प्रभावपूर्ण भजन प्रस्तुत किया। इनके पश्चात डी.ए.वी. स्नात्कोत्तर कालेज में संस्कृत विभाग की अध्यक्षा **डा. श्रीमति सुखदा सोलंकी** ने अपने सम्बोधन में कहा कि मनुष्य अच्छे व बुरे दो प्रकार के होते हैं। स्वभाव व वृत्ति भी दो प्रकार की होती है। इसी प्रकार स्वर्ग व नरक की स्थिति है। उन्होंने कहा कि बेटी पैदा होती है तो पिता की नींद उड़ जाती है। चिन्ता होती है कि मैं इसे किसे दूंगा? वह उसकी बेटी को सुखी रख पायेगा या नहीं? पुत्री माता–पिता के लिए महती चिन्ता का कारण बन जाती है। रानी लक्ष्मी बाई का उदाहरण देकर उन्होंने कहा कि उनमें महान देश भक्ति थी। इस कारण हम उन्हें आज भी याद करते हैं। उन्होंने कहा कि सन्तान पर पिता से अधिक माता का प्रभाव पड़ता है। विदुषी आचार्या ने कहा कि कहीं माता को मम्मी कहा जाता है जबकि हमारे यहां जननी कहा जाता है। दोनों शब्दों के अर्थों में उन्होंने भारी अन्तर बताया। विदुषी डा. सुखदा सांलंकी ने कहा कि वेदवाणी अमृतवाणी है। वेदवाणी हमें जीना सिखाती है। वेद से घर स्वर्ग बन जाता है। उन्होंने श्रोताओं से कहा कि गलत चीजों का विरोध और अच्छी चीजों का समर्थन करना सीखों। महर्षि दयानन्द और उनके उपकारों को उन्होंने याद रखने के लिए कहा। उन्होंने कहा कि जब मैं अपने महाविद्यालय, जिसमें 30 हजार छात्र–छात्रायें पढ़ते हैं, में जाती हूं तो सबसे पहले महर्षि दयानन्द को प्रणाम करती हूं। इसलिए कि यदि दयानन्द न हुए होते तो मैं संस्कृत न पढ़ती और इस महाविद्यालय में संस्कृत विभागाध्यक्ष व शिक्षिका न बनती और यह महाविद्यालय दयानन्द एंग्लोवैदिक कालेज भी न होता।

आर्य समाज, बंगलौर की प्रधाना श्रीमति हर्ष चावला ने भी सम्मेलन को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा कि नारी को नरक का द्वार कहना और महिला सम्मेलन करना, इन दोनों में विरोधाभास है। नारी पुरूष का मार्ग प्रदर्शन करती है, उसे प्रेरणा देती है तथा देश का सृजन करती है। उन्होंने कहा कि उज्जवल उदाहरणों से इतिहास भरा पड़ा है। उन्होंने कहा कि वैदिक काल और बाद के समय में स्त्रियों के बिना कोई शुभ कार्य नहीं किया जाता था। उन्होंने याज्ञवल्क्य व गार्गी के आत्मा और परमात्मा विषय पर हुए संवाद की चर्चा की और कहा कि गार्गी ने तर्कपूर्ण विचार प्रस्तुत किए थे। श्रीमति हर्ष चावला ने लक्ष्मीबाई, जीजाबाई और पन्नादेवी आदि महान स्त्रियों की चर्चा भी की। उन्होंने कहा कि नारी के बिना समाज व देश आगे नहीं बढ़ सकता। एक नारी को शिक्षित करने से दो परिवारों का सुधार होता है। उन्होंने कहा कि आज नारी सभी क्षेत्रों में ऊंचे पदों पर विराजमान है। नारी का दरजा बहुत ऊंचा है। उन्होंने कहा कि निश्चय ही नारी स्वर्ग का द्वार है। वही देश व परिवार उन्नति कर सकता है जहां कि नारी सुशिक्षित, सदाचारी, वेद पारायण और वेदों का स्वाध्याय करने वाली हो।

महिला सम्मेलन की अध्यक्षा सुश्री प्रिंयका शास्त्री ने कहा कि यदि नारी नरक का द्वार है तो नरक में जाने वाले कौन लोग हैं? इस प्रश्न का उत्तर एक ज्वलन्त मुद्दा है। उन्होंने कहा कि यह कहना गलत है कि नारी नरक का द्वार है। हनी सिंह और बच्चों का उससे भ्रमित होने की चर्चा कर उन्होंने कहा कि बच्चा जैसा देखता है वैसा ही सीखता है। महाराज भृतहरि का उल्लेख कर उन्होंने कहा कि बच्चा अपनी अल्पावस्था में जो देखता है उसी के अनुरूप उसका भावी जीवन होता है। उन्होंने कहा कि हमें सोचना है कि हम अपने बच्चों को क्या दे रहें हैं। विदुषी प्रियंका शास्त्री ने कहा कि आज हम महर्षि दयानन्द के कारण इस मंच पर खड़े हैं। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द गृहस्थ जीवन से पृथक रहे परन्तु उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्थ समुल्लास में गृहस्थ धर्म हमें समझाया है। गोकरूणानिधि पुस्तक की चर्चा कर विदुषी वक्ता ने सत्यार्थ प्रकाश की मानव जीवन में उपयोगिता प्रतिपादित की। उन्होंने कहा कि काशिका पुस्तक का भाष्य करते हुए उनकी विदुषी आचार्या डा. प्रज्ञा देवी ने अष्टाध्यायी के सूत्र ''कन्या शोकः'' का अर्थ ''अविद्या शोकः'' कर दिया था जिसकी उपपत्ति कर उन्होंने इसे ठीक बताया। उन्होंने कहा कि यदि कन्या विद्या अध्ययन नहीं करेगी तभी कन्या शोकः चरितार्थ होगा। उन्होंने कहा कि बेटियां दो कुलों की दीपक हैं, मातृ कुल और पति कुल की। स्त्रियों का परिधान कैसा हो, यह ध्यान देने की बात है। उन्होंने कहा कि युवक व युवतियों में अच्छे संस्कारों के लिए हर गली, मुहल्ले, घर–घर में गुरूकुल की स्थापना होनी चाहिये। **उन्होंने आगे कहा कि आवश्यकता देश के दिमाग और दिल को बदलने की है।** यही हमारा वृद्ध भारत विश्व का गुरू है। यह महिला सम्मेलन बहुत ही सराहनीय सम्मेलन रहा। उन्होंने समापन पर कहा कि गुरूकुल को सवंर्धित करें जिससे देश उन्नत हो सके। सम्मेलन शान्तिपाठ के साथ सम्पन्न हुआ।

आश्रम का दूसरे दिन का उत्सव आज प्रातः 5:00 बजे न्यास के संरक्षक स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती द्वारा योग साधना एवं योग प्रशिक्षण से आरम्भ हुआ। तदन्तर यजुर्वेद के मन्त्रों से बहुकुण्डीय यज्ञ सम्पन्न किया गया जिसमें मन्त्रोच्चार पाणिनी कन्या गुरूकुल महाविद्यालय, वाराणसी की छात्राओं द्वारा किया गया। यज्ञ के पश्चात पं. सत्यपाल सरल एवं श्रोताओं को अपनी मुधर वाणी से जादू कर लेने वाले श्री दिनेश पथिक के भजन हुए। उनका एक भजन था – **''प्रभु जी मुझे यह वरदान दों, मैं कभी न तुमसे जुदा रहूं। जैसे सुमन सुगन्ध का मेल है, जैसे तन व प्राण का खेल है। वैसे हर काल में हर हाल में, तेरे रंग में मैं रंगा रहूं। प्रभु जी मुझे यह वरदान दों मैं कभी न तुमसे जुदा रहूं। ... कोई कर सके मजबूर न, पल भर रहूं कभी दूर न। न वियोग हो संयोग में, मनोयोग से मैं जुड़ा रहूं।। प्रभुजी मुझे वरदान दों मैं तुमसे सदा जुड़ा रहूं।।''** दूसरा भजन था – **''जिस दिन घमण्ड अपने सर से उतार देगा। उस दिन तुझे विधाता अनमोल प्यार देगा। उसके समान जग में, दाता न और कोई। देने पे जब वो आये, तुझे बेसुमार देगा।। मन, वचन, कर्म उसकी अज्ञानुसार कर लें, वह तो तेरा पिता है तुझ पे सर्वस्व उतार देगा।''** आपने एक पंजाबी भजन भी सुनाया जिसके बोल थे – **''ऋषियां मुनियां दी संगत करया कर, उच्च विचारा दें विच्च विचरा कर।।''** भजन सुनकर सभी श्रोता भावविभोर हो गये। कार्यक्रम में संचालक श्री उत्तम मुनि वानप्रस्थी ने गायक दिनेश पथिक की आवाज व प्रस्तुति की प्रशंसा की। **इसके पश्चात यज्ञ के ब्रह्मा स्वामी दिव्यानन्द सरस्वती ने आज के यजमानों को आर्शीवाद दिया।** आयोजन में न्यास के प्रधान श्री दर्शन कुमार अग्निहोत्री, महामंत्री श्री प्रेम प्रकाश शर्मा सहित बड़ी संख्या में स्त्री, पुरूष, युवक–युवती व बच्चे उपस्थित थे। आर्य वैदिक साहित्य एवं अन्य उपयोगी वस्तुओं के स्टाल भी घर्मप्रेमियों के लिए उपलब्ध थे।

– इं. प्रेम प्रकाश शर्मा, महामंत्री / मन मोहन कुमार आर्य
वैदिक साधन आश्रम, तपोवन
नालापानी, देहरादून।